वार्तालाप 427, नेल्लूर (आं.प्र.), दिनांक 25.10.07
Disc.CD No.427, dated 25.10.07 at Nellore (Andhra Pradesh)

समय – 0.35
जिज्ञासू – द्विजन्मा माना क्या?
बाबा– द्विजन्मा। 'द्वि' माना दो, 'जन्म' माना जन्म। ब्राह्मणों के लिए कहा जाता है कि ब्राह्मण का जब जन्म होता है पेट से। बच्चा पेट से जन्म लेता है, गर्भ से जन्म लेता है। तो उसको पक्का ब्राह्मण नहीं माना जाता है। क्या? उसको द्विज नहीं कहते हैं। द्विज माना ब्राह्मण। द्विज तब कहा जाता है। जब उनका यज्ञोपवित होता है। क्या? यज्ञोपवित जब होता है तब कहते हैं पक्का ब्राह्मण। ब्राह्मण जो है वो बच्चे की शादी तब तक नहीं करेंगे। जब तक उसका यज्ञोपवित न हो जाए। तो उसको कहते हैं द्विज। ये कहाँ से परंपरा चली? यहाँ संगमयुग में।
Time: 0.35
Student: What does *dwijanma* mean?
Baba: *Dwijanma. 'Dwi'* means two, *'janma'* means birth. It is said for the Brahmins, when a Brahmin is born through the womb; when a child takes birth through the womb, he is not considered to be a complete Brahmin. What? He is not called *Dwij*. *Dwij* means Brahmin. He is called *Dwij* only when he undergoes the thread ceremony *(yagyopavit).* What? When the thread ceremony *(yagyopavit)* takes place, then he is called a firm Brahmin. The Brahmin's don't marry off their child until he has undergone the thread ceremony. So, he is called *Dwij*. Where did this tradition begin? Here, in the Confluence Age.

संगमयुग में जब बाप आते हैं। तो ब्राह्मण बच्चों ने जन्म लिया। ब्रह्मा से जन्म लिया। ब्राह्मण हुआ। प्रजापिता ब्रह्मा से जन्म लिया वो भी क्या हुए? ब्राह्मण हुए। लेकिन जब तक यज्ञोपवित न धारण करें तब तक ब्राह्मण नहीं कहे जा सकते। यज्ञोपवित माना क्या? तीन धागे। एक है ब्रह्मा की स्मृति का धागा। ब्रह्मा की पहचान। ब्रह्मा कौन? ब्रह्मा के रूप में पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मा कौन? और उसका क्या पार्ट है? फिर विष्णु के रूप में पार्ट बजाने वाली आत्मा कौन? और शंकर के रूप में पार्ट बजाने वाली आत्मा कौन? ये पक्का–पक्का बुद्धि में बैठ जाए। कोई पूछे कैसे? तो उसका भी जवाब है।
When the Father came in the Confluence Age, Brahmins took birth. They took birth through Brahma. They became Brahmins. Even when they were born through Prajapita Brahma, what did they become? They became Brahmins. But until they wear the *yagyopavit* (the holy thread), they cannot be called Brahmins. What does *yagyopavit* mean? Three threads; one is the thread of Brahma's remembrance, the recognition of Brahma. Who is Brahma? Which is the special soul who plays the part in the form of Brahma? And what is his part? Then which is the special soul who plays the part in the form of Vishnu? And which is the soul who plays a part in the form of Shankar? It should fit firmly in the intellect. Someone may ask, how? There is an answer for that as well.

कि ये ब्रह्मा, ये विष्णु और ये शंकर। ये तीन सूत्रों को जो बुद्धि में अच्छी तरह धारण कर ले उसको कहा जाता है यज्ञोपवितधारी ब्राह्मण। द्विजन्मा। दूसरा जन्म। जैसे सतयुग के कृष्ण का गायन है या संगम युग के कृष्ण का गायन है? संगमयुगी कृष्ण का गायन है। तो संगमयुग में जो कृष्ण है। वो कौन व्यक्तित्व है जो संगमयुगी कृष्ण का पार्ट बजाता है? शंकर। बाबा ने मुरली में बोला है, नेक्स्ट टू गॉड इस शंकर, नेक्स्ट टू गॉड इस प्रजापिता, नेक्स्ट टू गॉड इस नारायण, और नेक्स्ट टू गॉड इस कृष्ण। माना कृष्ण, नारायण, प्रजापिता ये सब एक ही व्यक्ति का नाम है। पर्सनालिटी एक ही है। तो शंकर को भी जनेयु धारण

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

करते दिखाते हैं। शंकर का जो चित्र होता है उसमें यज्ञोपवित दिखाते हैं कि नहीं। तो वो सम्पूर्ण ब्राह्मण हो गया। जब तीनों मूर्तियों का पक्का–पक्का ज्ञान बुद्धि में बैठ जाए।
This Brahma, this Vishnu and this Shankar, the one who inculcates these three threads in the intellect properly is called 'a Brahmin with *yagyopavit*', *Dwijanma* (born twice), (the one who takes) second birth. For example, is the Golden Age Krishna praised or is the Confluence Age Krishna praised? The Confluence Age Krishna is praised. So, Krishna in the Confluence Age; who is the personality who plays the part of Krishna in the Confluence Age? Shankar. Baba has said in the *Murlis* , Next to God is Shankar, next to God is Prajapita, next to God is Narayan, and next to God is Krishna. It means that Krishna, Narayan, Prajapita, all these are names of the same person. The personality is the same. So, Shankar is also shown to be wearing a *Janeu* (the holy thread). Is *yagyopavit* (the holy thread) shown in the picture of Shankar or not? So, he becomes a complete Brahmin when the firm knowledge of the three personalities fits in his intellect.

जिज्ञासू – लेकिन बाबा, अभी ब्रह्मा पार्टधारी आत्मा कौन है?
बाबा – हाँ, ब्रह्मा दादा लेखराज ने तो शरीर छोड़ दिया। लेकिन मुरली में बोला है, वास्तव में ये ब्रह्मा तुम्हारी जगदम्बा है। रियलीटी में जगदम्बा कौन है? ये ब्रह्मा दाढ़ी मुँछ वाला। ये तुम्हारी जगदम्बा है; परंतु तन पुरूष का है। क्या? परंतु लगा दिया। इसीलिए पक्की जगदम्बा नहीं कही जा सकती। तन पुरूष का है। तो पुरूष तन धारी को कन्याओं–माताओं के चार्ज में कैसे रखा जाए। इसीलिए ओम राधे को निमित्त बनाय दिया। कब तक के लिए? जब तक वो जगदम्बा जन्म न ले इस सृष्टि पर। क्या? तो सन् 65 में ही सरस्वती ने भी शरीर छोड़ा और सन् 65 में ही जो जगदम्बा है, इस सृष्टि पर प्रत्यक्ष होने वाली। जिसमें ब्रह्मा की सोल प्रवेश करके पार्ट बजाती है जगदम्बा का वो भी साकार जन्म ले लेती है। क्या? उधर ओम राधे मम्मा ने शरीर छोड़ा जो कन्याओं–माताओं की सम्भाल करने वाली थी और इधर साकार रूप में वो जगदम्बा जो यज्ञ के आदि में थी। जिसके मुख से साक्षात्कारों को सुनाया गया प्रजापिता को। तो प्रजापिता पहला ब्राह्मण बन गया।
Student: But Baba, which soul is playing the role of Brahma now?
Baba: Yes, Brahma, Dada Lekhraj has indeed left his body. But it has been said in the *Murli*, actually this Brahma is your *Jagdamba*. Who is *Jagdamba* in reality? This Brahma with beard and moustache, he is your Jagdamba, but the body is that of a male. What? A 'but' has been added. That is why he cannot be called a real *Jagdamba*. The body is of a male. So, how can a male bodily being be kept in charge of the virgins and mothers? That is why Om Radhey was made an instrument. Until when? Until that *Jagdamba* takes birth in this world. What? So, Saraswati left her body in the year 1965 and in the same year *Jagdamba* who is to be revealed in the world, in whom the soul of Brahma enters and plays its part of *Jagdamba*, also takes a corporeal birth. What? There Om Radhey Mamma, who used to take care of the virgins and mothers, left her body and here that *Jagdamba* in corporeal form who was present in the beginning of the *yagya*, through whose mouth the visions were described to Prajapita - , thus Prajapita became the first Brahmin - (took birth).

पहला ब्राह्मण किसका बना? किस आधार पर बना? किसी के मुख से सुना होगा तभी तो ब्राह्मण बना। ब्रह्मा मुख की औलाद ही तो ब्राह्मण कहा जाता है। तो प्रजापिता कौनसे ब्रह्मा की औलाद है? वो माता जो यज्ञ के आदि में थी जिसके मुख से सुना। वो ही पहली माता। वो ही माता फिर सन् 66 में जन्म ले लेती है। मम्मा शरीर छोड़ देती है। तो वो बड़ी हो जाए तब उसमें ब्रह्मा की सोल प्रवेश होती है। फिर वो जगदम्बा का पार्ट बजाती है। जब माता के रूप में संसार में प्रत्यक्ष हुई। आदि में है दुर्गा का रूप और अंत में है उसका महाकाली का रूप। जगदम्बा का आदि सात्विक स्टेज का रूप है दुर्गा। दुर्गुणों को दूर करने

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

वाली दुर्गा और अंत का पार्ट है महाकाली। क्योंकि देवियों के ऊपर ये जिम्मेवारी रखी गई है खास। क्या? ब्रह्मा द्वारा किसका गेट खोलता हूँ? स्वर्ग का गेट खोलता हूँ। माताओं के द्वारा गेट खोला जाता है। पुरूषों के द्वारा गेट नहीं खोला जाता। क्यों?
जिज्ञासू– पुरूष सब दुर्योधन दुःशासन है।
Whose Brahmin did he become first? On what basis did he become? He would have heard through someone's mouth, only then did he become a Brahmin. Only the progeny of Brahma's mouth is called a Brahmin. So, Prajapita is a child of which Brahma? That mother, who was present in the beginning of the *yagya*, through whose mouth he heard, she herself is the first mother. The same mother takes birth in the year 1966. Mamma leaves her body. So, when she (*Jagadamba*) grows up, the soul of Brahma enters in her. Then it plays the part of *Jagdamba*; when she is revealed in the world as a mother. In the beginning she has a form of *Durga* and in the end she has the form of *Mahakali*. The form of *Jagdamba* in the initial true *(satwik)* stage is of *Durga*. *Durga* is the one who removes the bad qualities *(durgun)* and her part in the end is of *Mahakali*; because this responsibility has especially been placed on the *devis* (female deities). What? Whose gate do I open through Brahma? I open the gate of heaven. Gate is opened by the mothers. The gate is not opened by the men. Why?
Student: All men are *Duryodhans* and *Dushasans*.

बाबा – सब पुरूष जो है वो प्योरिटी के मामले में डब्बा गोल है। कन्याऐं–माताऐं अगर अपने पर आ जाऐं, हिम्मत करें तो वो नई दुनियाँ की स्थापना में परमात्मा की सबसे ज्यादा सहयोगी बन सकती हैं। तो उनमें जगदम्बा का नाम है और जगदम्बा इतनी पावरफुल भी है कि अगर कोई न माने। क्या? पहली–2 रचना है ना। किसकी? गॉड फादर की। रचयिता बाप की पहली रचना है तो ज्यादा पावरफुल होगी की नहीं? इतनी पावरफुल है कि अगर न माने, ब्राह्मण;
Baba: In the subject of purity all men are failures. If virgins and mothers become determined, if they show courage, they can become most helpful to the Supreme Soul in the establishment of the new world. So, *Jagdamba's* name is included among them and *Jagdamba* is also so powerful that if someone does not accept; what? She is the first creation, isn't she? Whose? God the Father's. She is the first creation of the creator Father; so, will she be more powerful or not? She is so powerful that if the Brahmins do not accept….;

ब्राह्मण तो दो तरह के होते हैं। अच्छे ब्राह्मण और रावण, कुम्भकरण, मेघनाथ जैसे ब्राह्मण। संख्या किनकी ज्यादा होती है? बुरे ब्राह्मणों की संख्या ज्यादा होती है। राक्षसी ब्राह्मणों की। तो अगर वो नहीं मानते हैं तो फिर वो महाकाली का रूप धारण कर लेती है और सब आसुरी ब्राह्मणों का पत्ता साफ कर देती है। संघार कर देती है। तो क्या तलवार से काट देती है? नहीं। अनिश्चय बुद्धि बना देती है। ऐसा पार्ट बजाती है कि सारे के सारे आसुरी ब्राह्मण क्या बन जाते हैं? अनिश्चय बुद्धि मरंती। मर जाते हैं। मर गए माना खलास हो जाते हैं। जब मर ही गए तो पद क्या पायेंगे? तो शक्तियों को ये काम मिला हुआ है। क्या? असुर संघारणी। ब्रह्मा का काम नहीं है असुरों का संघार करना। शंकर का नाम कहा जाता है। क्या? शंकर द्वारा विनाश; लेकिन शंकर विनाश करता नहीं है। क्या डमरू लेके और डांस करने से विनाश हो जाता है क्या? अरे! नाचने से विनाश हो जाएगा क्या? विनाश करने के लिए तो पावरफुल आत्मा चाहिए। कैसी पावरफुल?
Brahmins are of two kinds. Good Brahmins; and the Brahmins like Ravan, *Kumbhakarna*, *Meghnad*. Whose number is more? The number of bad Brahmins, demoniac Brahmins is more. So, if they do not accept, then she assumes the form of *Mahakali* and destroys all the demoniac Brahmins. So, does she cut them with a sword? No. She makes them lose faith. She plays such a part that, what do all the Brahmins become? The one who develops a doubtful

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

intellect dies (stop following the knowledge). They die. They died means that they perish. If they have died, what post will they achieve? So, *shaktis* have been given this job. What? Destroyer of demons *(asur sanharini)*. Destruction of demons is not the task of Brahma. Shankar's name is mentioned (for this task of destruction). What? Destruction by Shankar; but Shankar doesn't perform destruction. Does destruction take place by dancing with a *damru* (a small drum) in his hands? Arey! Will destruction take place by dancing? A powerful soul is required for destruction. How powerful?

विनाश काहे से होता है? विनाश प्योरिटी से होता है या इम्प्योरिटी से होता है? इम्प्युरीटी से। विनाश पवित्रता से होता है या अपवित्रता से विनाश होता है? इम्प्योरिटी से विनाश। दुनियाँ में जैसे–जैसे इम्प्योरिटी बढ़ती जा रही है। दुनियाँ गड्ढे में गिरती जा रही है। तेा ये इम्प्योरिटी का जो काम है। वो असुर संघारनी के द्वारा महाकाली के रूप में गाया हुआ है। इसीलिए देवी के दो रूप हैं। एक रूप है शाकाहारी वैष्णवी देवी, लक्ष्मी, भारत माता। और दूसरा रूप है मांसाहारी। महाकाली के मंदिर में क्या चढ़ाया जाता है? मांस चढ़ाया जाता है। काट–काट के देहभान। अच्छी तरह से खाती है। चबा–चबा के। इस सृष्टि में से देहभान का सम्पूर्ण नाश कर देती है।

How does destruction take place? Does destruction take place through purity or through impurity? Does destruction take place through purity or through impurity? Through impurity. Does destruction take place through purity or through impurity? Destruction is through impurity. As the impurity is increasing in the world, the world is falling into a pit. So, this task of impurity is famous through the destroyer of demons in the form of *Mahakali*. That is why there are two forms of *Devi*. One form is the vegetarian *Vaishnavi Devi*, *Lakshmi*, Mother India. And the second form is non-vegetarian. What is offered in the temple of *Mahakali*? Meat is offered. She cuts the body consciousness into pieces and eats it nicely, by chewing it well. She destroys the body consciousness completely from this world.

समय – 19.05
जिज्ञासू – बाबा, आत्म परिवर्तन की सहज विधि क्या है?
बाबा– आत्म परिवर्तन का सबसे सहज विधि है बिन्दी आत्मा याद करो। स्टार भूलो मत। इससे सहज विधि और क्या होगी? दूसरे को देखो तो नाक मत देखो, मुँह मत देखो, पेट मत देखो। क्या देखा? स्टार देखो। अपने अंदर भी स्टार देखना और दूसरों के अंदर भी भृकुटी में स्टार देखना। ये सबसे विधि सहज है। सुबह से लेकरके शाम तक तांत लगी रहे। क्या? स्टार को देखना। सुबह उठते–उठते ही पक्का फाउन्डेशन डाल दो। फाउन्डेशन पक्का होगा तो बिल्डिंग पक्की होगी। ऊँचे ते ऊँची बिल्डिंग बनालो। फाउन्डेशन अगर कच्चा है तो बिल्डिंग भी कच्ची होगी। तो सवेरे–सवेरे का वेला फाउन्डेशन का वेला है। जैसे ही उठो कुछ याद न आए। क्या याद आए सबसे पहले? मैं आत्मा स्टार। बैठ जाओ ध्यान में। कठिन है क्या? ये काम कठिन है? अरे! हम आत्मा है या देह हैं?
जिज्ञासू – आत्मा।

Time: 19.05
Student: Baba, what is the easy method of self transformation?
Baba: The easiest way of self-transformation is to remember the point-like soul. Do not forget the star. Which other way will be easier than this? When you see others, don't see their nose, don't see their mouth, don't see their stomach. What should you see? See the star. See the star within yourself and look at the star in between the eyebrows in others too. This is the easiest method. From morning till evening you should be busy in this. What? Looking at the star. As soon as you wake up in the morning, lay this strong foundation. If the foundation is strong, the building will be strong. You may build the tallest building, but if the foundation

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

is weak, then the building will also be weak. The early morning period is the foundation time. As soon as you wake up you should not remember anything. What should come to your mind first of all? I soul am a star. Sit in remembrance. Is it difficult? Is this task difficult? Arey! Are we souls or bodies?
Student: Souls.

बाबा – जो चीज़ हम हैं उसी चीज़ को याद नहीं कर सकते? 63 जन्म बिन्दी लगाते चले आए। टीका लगाते चले आए। अब टिकने की बारी आई है। उस स्वरूप में, स्मृति स्वरूप बनने की बारी आई है। सिर्फ एक जन्म। तो प्रैक्टिस नहीं करनी चाहिए? और बूढ़े आदमी को तो और ही सहज, कोई धंधा ही नहीं। क्या? वानप्रस्थी हो गए। दुनियाँदारी से पीछा छूटा। बस एक ही काम रह गया। पुरूषार्थ। देह के लिए जो कुछ करना था, धरना था, सो कर लिया। बहुत सहज है। वानप्रस्थियों के लिए तो बहुत सहज है। कोई धंधा–धोरी नहीं। एक ही धंधा रह गया। अपन को आत्मा समझना और बाप को याद करना।
Baba: Can't we remember what we actually are? For 63 births we have been applying *bindi*, we have been applying *teeka* (a vermillion mark on the forehead). The turn (chance) to become constant *(tikna)* (in souls conscious stage) has arrived. The chance has come to become a form of awareness in that form (of a soul). Just one birth. So, should we not practice? And for an old person it is much easier. They don't have any other job at all. What? They have become *vaanprasthi* (retired). They have become free from the worldly matters. They have only one task left to be done; of doing purusharth (special effort for the soul). Whatever they had to do for the body, they have already done it. It is very easy. It is very easy indeed for the retired persons. They don't have any occupation to pursue. They have only one occupation left. To consider oneself to be a soul and to remember the Father.

हाँ, ये बात ज़रूर है कि हाव–हाव करते रहें। ये भी मेरा, वो भी मेरा, इस बच्चे ने जो कमाया वो भी मेरे पास लाओ, बैंक में डालो। तो आत्मा याद आने वाली नहीं है। सब कुछ तेरा। कुछ नहीं मेरा। ये देह मेरी नहीं, देह के संबंध मेरे नहीं, देह के पदार्थ भी मेरे नहीं। सब अर्पण कर दिया। तो सबकुछ जब अर्पण कर देंगे ईश्वरीय सेवा में, दे देंगे। पक्का कर लेंगे कि मुझे अपने लिए यूज़ कुछ भी नहीं करना है। अपने लिए बस दो रोटी। पाव भर आटा काफी है। पाव भर आटा आदमी को मिलता रहे तो ज़िंदा बना रहेगा कि नहीं? भगवान को याद कर सकता है कि नहीं कर सकता है? कर सकता है। बस इतना चाहिए और कुछ नहीं चाहिए। अगर ये पक्का कर लिया तो क्यों नहीं याद आएगा। सबसे सहज पुरूषार्थ है।
Yes, it is possible that if you keep longing: this is mine as well as that is mine, also bring to me whatever this child has earned; deposit it in the bank. So, you are not going to remember the soul. (When you think:) Everything belongs to you (ShivBaba). Nothing belongs to me. This body is not mine; the relationships of body are not mine as well as the things related to the body are not mine. Everything has been surrendered. When you surrender everything in the Godly service, when you give it; when you decide firmly: I don't have to use anything for myself. Just two *roties*, 250 grams of wheat flour is enough for me. If a person continues to get 250 grams of wheat flour, then will he continue to be alive or not? Can he remember God or not? He can. I require only this much and nothing else. If you make this (decision) firm then why will you not remember (ShivBaba)? It is the easiest *purusharth*.

समय – 41.38
जिज्ञासू – सत्यम् शिवम् सुंदरम्, तो कौन सुन्दर है?
बाबा – जो सत्य है वही शिव है माना कल्याणकारी। अगर सत्य नहीं है तो कल्याणकारी भी नहीं है और जो कल्याणकारी है वही सुंदर है। कोई चेहरे का बड़ा सुंदर हो; लेकिन

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

अकल्याण करने वाला हो। सत्यानाश करने वाला हो। तो वो कल्याणकारी नहीं है। जो सत्य है वो कल्याणकारी भी है। वही सुंदर है। सत्य ही सुंदर है और जो शिव है अर्थात् कल्याणकारी है। वो ही सुंदर है। माना चेहरे, मोहड़े से कोई कितना भी कुरूप हो; लेकिन दूसरों का कल्याण करने वाला हो किसी का अकल्याण करने वाला नहीं है। मन से वायब्रेशन अकल्याण के नहीं छोड़ता, दृष्टि जो हैं वो किसी के प्रति अकल्याण की नहीं जाती। दृष्टि कल्याण की है, भावना कल्याण की है। कर्मेन्द्रियों से जो कर्म करता है वो भी दूसरों के कल्याण के लिए करता है; लेकिन चेहरे से भले कुरूप हो तो उसको क्या कहेंगे? शिव कहेंगे कल्याणकारी कहेंगे, सच्चा कहेंगे या झूठा कहेंगे? उसी को सच्चा कहेंगे।

Time: 41.38

Student: It is said, *Satyam Shivam Sundaram*. So, who is *sundar* (beautiful)?

Baba: The one who is true is Himself Shiv, i.e. benevolent. If someone is not true, then he is not benevolent either. And the one who is benevolent is himself beautiful. Someone may have a very beautiful face but brings harm (to others), brings about destruction, then he is not benevolent.The one who is true is benevolent as well. He himself is beautiful. Truth alone is beautiful and the one who is Shiv, i.e. benevolent is indeed beautiful. It means that however much a person is ugly, but if he brings benefit to others, does not bring harm to anyone, does not spread vibrations of harm through the mind, does not see anyone with a vision of bringing harm, the vision is benevolent, the feelings are benevolent, the actions that he performs through the organs of action are also for others' benefit, but if he has an ugly face, then what will he be called? Will he be called Shiv, i.e. benevolent, true or false? He alone will be called a true person.

तो इस दुनियाँ में 100 पर्सेन्ट सत्यम् और 100 पर्सेन्ट शिवम् माना कल्याणकारी और 100 सुंदर। वो एक मुकर्रर रथ में वो ऊपर वाला आकरके प्रत्यक्ष होता है। ये आँखे किसको देखना चाहती हैं? कुरूप को देखना चाहती है या रूप को देखना चाहती है? आँखे किस चीज़ की लोभी हैं? रूप की लोभी है ना; लेकिन इस संसार में सबसे ज्यादा रूपवान, सबसे ज्यादा सुंदर भगवान ही बनकरके इस संसार में आता है। पहले गुप्त रूप में आता है। तो उतना सुंदर नहीं दिखाई पड़ेगा। साधारण तन। फिर जब लास्ट में संसार के सामने प्रत्यक्ष होता है तो जितना भगवान सुंदर दिखाई पड़ेगा, भगवान को देखने के लिए जितना लालायित आँखे रहेंगी उतना और कोई भी दुनियाँ में लालायित नहीं होगा। तो उसको सत्यम् , वो दुनियाँ में सबसे जास्ती 100 पर्सेन्ट सच्चा भी है। उससे ज्यादा दुनियाँ में और कोई कल्याणकारी भी नहीं है और उससे ज्यादा सुंदर भी कोई दुनियाँ में नहीं होगा। साबित नहीं होगा। जो सुंदर होगा उसको सारी दुनियाँ देखेगी, पेट ही नहीं भरेगा। बस देखते ही रहें, देखते ही रहें।

So, the one who is 100 percent *Satyam* (true), 100 percent *Shivam*, i.e. benevolent and 100 percent beautiful, that 'above one' (the Supreme Soul) enters in that permanent chariot and is revealed. Whom do these eyes wish to see? Do they want to see the ugly one or the beautiful one? Eyes are greedy for what? They are greedy for beauty. But only God comes in the world as the most beautiful one, the best-looking one. Initially He comes in an incognito form. So, He won't appear to be so beautiful (with an) ordinary body. Then, at last, when He is revealed in front of the world, then nobody will appear as beautiful as God, nobody's eyes in the world will be as thirsty to see anyone as God. So, He is truth, He is the most truthful, also 100 percent true in the world. Nobody is more benevolent in the world than Him and nobody in the world will be as beautiful as Him either. Nobody will be proved (as beautiful as Him). The entire world will see the beautiful one; they won't feel satisfied at all. (They will think) Let me continue to see Him, let me go on seeing Him.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय – 2.40
जिज्ञासू – बाबा, बाबा कहते हैं कि तन, मन, धन, समय, संपर्क सब कुछ स्वाहा करना है। तो तन, मन, धन तो अपने हाथ में है; लेकिन संबंधी, सम्पर्की तो सुनने के लिए भी तैयार नहीं है। संबंधी, सम्पर्की तो दूर–दूर भागते हैं सुनने के लिए भी तैयार नहीं होते हैं।
बाबा – जो ईश्वरीय सेवा में लग जाएगा उसके संबंधी सम्पर्की दूर–दूर भागते हैं या जो ईश्वरीय सेवा में नहीं लगता है संबंधियों, सम्पर्कीयों की सेवा में लगा रहता है। उससे दूर–दूर भागते हैं?
जिज्ञासू – जो ईश्वरीय सेवा में लगा रहता है।
Time: 2.40
Student: Baba, Baba says that we should sacrifice everything including the body, mind, wealth, time, contacts. So, the body, mind and wealth are in our hands, but the relatives and contacts are not even ready to listen. The relatives and contacts run far away from us, they are not even ready to listen.
Baba: Do the relatives and contacts of the one who becomes engaged in Godly service run far away or do they run away from the one who doesn't remain busy in Godly service, but [remains busy] in serving the relatives and contacts?
Student: The one who remains busy in Godly service.

बाबा – तो अच्छा ही हुआ ना तो फिर। इससे साबित हो गया कि उसने अपने संबंधियों को और सम्पर्कियों को लगा दिया। लगा दिया तब ही तो वो दूर–दूर भाग रहे हैं। सम्पर्कियों की और संबंधियों की जो भी ताकत है। उनको सुनाया है तब ही तो वो दूर–दूर भाग रहे हैं कि बिना सुनाए दूर–दूर भाग रहे हैं?
जिज्ञासू – सुनाने के बाद।
बाबा– उनको सुनाया है। इसका मतलब संबंधियों और सम्पर्कियों की ताकत को उसने लगा दिया। नहीं समझ में आया।
जिज्ञासू – आया।
Baba: So, then it is good, isn't it? It proves that he invested his relatives and contacts (in Godly service). He has invested them; only then are they running far away from him. Whatever power of contacts and relatives; he has narrated (knowledge) to them; only then are they running away or are they running away without narrating (the knowledge) to them?
Student: After narrating to them.
Baba: He has narrated to them. It means that he has invested the power of the relatives and contacts. Didn't you understand?
Student: I understood.

समय – 3.54
जिज्ञासू – बाबा, गीतापाठशालाओं में और मिनीमधुबनों में जो संधली और कुर्सी अलग की जाती है बाबा के लिए। तो उसको भक्तिमार्ग नहीं कहेंगे क्या?
बाबा – जो कुर्सी होती है कोई ऑफिस होता है। तो जो ऑफिस का मुखिया होता है। उसके लिए कुर्सी अलग नहीं होती?
जिज्ञासू – होती है।
बाबा – तो यहाँ अलग कुर्सी है तो खराब क्या बात है?
जिज्ञासू – नहीं, प्रैक्टीकल में नहीं है तो भी रखते हैं ना।
बाबा – प्रैक्टीकल में है तो रखेंगे। नहीं है मर–मरा गया तो रखने का कोई मतलब ही नहीं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 3.54
Student: Baba, a separate *sandali* and chair is put aside for Baba at the *Gitapathshalas* and *Minimadhubans*. Will it not be called a path of *bhakti* (devotion)?
Baba: A chair is set aside. Suppose there is an office, is a chair not set aside for the head of that office?
Student: It is.
Baba: So, if a chair is set aside here, what is wrong in it?
Student: They keep it even when he is not present in practical, don't they?
Baba: They keep it because he is in practical. If he is not present, if he dies then there is no meaning in keeping it.

समय – 4.30
जिज्ञासू – बाबा, संगम के बाद सतयुग में शिव की आत्मा को जड़वत कहेंगे?
बाबा– सतयुग में शिव होता है क्या? शिव नहीं होता; लेकिन शिव इस सृष्टि पर आ करके आप समान कोई को बनाके जाता है या नहीं बना के जाता है?
जिज्ञासू – बनाके जाता है।
Time: 4.30
Student: Baba, will the soul of Shiv be called non-living after the Confluence Age, i.e. in the Golden Age?
Baba: Does Shiv exist in the Golden Age? Shiv doesn't exist; but when He comes to this world does Shiv make someone equal to Himself before departing or not?
Student: He makes (someone equal to Himself) and departs.

बाबा – आप समान बनाके जाता है तब तो बच्चों को कहता है आप समान बनाओ। नहीं तो क्यों कहेगा? जो काम खुद न कर सके वो दूसरों से क्यों कराएगा? तो आप समान बनाकरके जाता है। जो आप समान बनता है उसका चित्र सतयुग के आदि से लेकरके अंतिम जन्म तक त्रेता तक रखा जाता है। सतयुग, त्रेता में चित्रकारी होती थी। क्या? ऐसे नहीं कि वहाँ चित्रकारी नहीं होती थी। और वो चित्र बनाए जाते थे। राजा रानी के, महाराजा महारानी के। वो चित्र ही द्वापरयुग में रह गए और बाकी सब लोप हो गया। इसलिए बाबा ने बोला है इस सृष्टि पर सदा कायम तो कोई चीज़ है नहीं। सदा कायम तो एक शिवबाबा ही है। कैसे? जिसमें प्रवेश करते हैं। जिसको बाबा कहा जाता है। साकार निराकार का मेल बाबा कहा जाता है। वो इस सृष्टि पर कायम रहता है। सदा कायम है और कोई मनुष्य आत्मा कुछ न कुछ कायम नहीं रहती है; लेकिन वो सदा कायम रहता है।
Baba: He makes someone equal to Himself and departs; only then does He tell the children , make others equal to yourself. Otherwise, why will He say? Why will He make others to do something that He himself is unable to do? So, He makes someone equal to Himself and then departs. The picture of the one who becomes equal to Him is kept from the beginning of the Golden Age to the last birth, until the Silver Age. Drawing and painting was prevalent in the Golden Age and the Silver Age. What? It is not that drawing and painting was not prevalent there. And those pictures of *Raja-Rani* (king and queen), *Maharaja-Maharani* (emperor and empress) used to be drawn. Only those pictures remained in the Copper Age and the rest perished. That is why Baba has said that nothing is permanent in this world. Only Shivbaba is permanent. How? The one, in whom He enters, who is called Baba, the combination of the incorporeal and the corporeal is called Baba; he remains permanent in this world. He is permanent; other human souls don't remain permanent (on this world) to some extent or the other. But he remains permanent.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय – 6.30
जिज्ञासू – बाबा, शिव सुप्रीम सोल परमधाम में अंतर्यामी कैसे?
बाबा – अंदर और बाहर ये बात इस दुनियाँ की है या बाहर की है? इस दुनियाँ की बात है। ऊँच और नीच इस दुनियाँ की बात है या परमधाम की बात है?
Time: 6.30
Student: Baba, how is Supreme Soul Shiv 'thought reader' *(antaryami)* in the Supreme Abode?
Baba: Is the question of inside and outside applicable to this world or outside ? It is about this world. Does the question of high and low pertain to this world or the Supreme Abode?

समय – 6.56
जिज्ञासू – परमधाम में शिव रहने के बाद जड़त्व कैसे?
बाबा – जड़ तब कहा जाता है। जब पाँच तत्वों का पुतला सिर्फ पुतला रह जाए, उसमें आत्मा न हो। तब कहेंगे जड़। परमधाम में पुतला होता है क्या? होता ही नहीं। वहाँ की तो बात ही नहीं है। न वहाँ जड़त्व की बात है न चैतन्य की बात है। इतना है कि आत्मा में जो संस्कार भरा हुआ है पार्ट बजाने का। जिस समय जो पार्ट नूँध गया वो उसी समय में आकरके पार्ट बजाएगा। सुप्रीम सोल का पार्ट नूँधा हुआ है। कब आके पार्ट बजाएगा? जब–जब संगमयुग होगा तब आकर पार्ट बजाएगा। तो जो पाप और पुण्य का लेखा–जोखा उसका बनता ही नहीं।
Time: 6.56
Student: How is Shiv non-living when He is in the Supreme Abode?
Baba: Something is called non-living when the body made up of the five elements remains just an effigy, when the soul is not present in it, then it is called non-living. Is there a body in the Supreme Abode? It doesn't exist at all. It is not a topic of that place at all. There, it is neither a question of inertness nor of life. But it is true that the *sanskars* of playing a part is contained in the soul; when it is destined to play that part, it will play its part at that time. The part of the Supreme Soul is fixed. When will He come and play His part? Whenever there is the Confluence Age, He will come and play His part. So, His accounts of sins and charity aren't made at all.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info